P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ब्रिटिश काल में आगरा में जूता उद्योग के विकास का इतिहास

गीता यादवेन्दु
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
आगरा कॉलेज,
आगरा

सारांश

आगरा में जूता व चमड़ा उद्योग को स्थापित करने का श्रेय मुगलों को जाता है। हुमाँयू और अकबर ने आगरा में चमड़ा उद्योग को स्थापित किया। चूँकि चमड़ा उद्योग से जूड़ी चर्मकार व जाटव जातियाँ यहाँ बहुसंख्या में संकेद्रित थी। अतः इस क्षेत्र में यह उद्योग आसानी से फला–फूला।

जब ब्रिटिश छावनियाँ 1805 में कानपुर व आगरा में स्थापित हुई उसके बाद अंग्रेजों ने चमड़ा उद्योग में आधुनिक तकनीकी को अपनाया। जे0 स्टीवार्ट ने कानपुर में पहली फैक्ट्री खोली। जानवरों की खाल खींचने में नवीन तकनीकी का प्रयोग भी जे0 स्टीवार्ट ने शुरू करवाया। अन्य क्षेत्रों के चमड़ा कारीगर भी आगरा और संयुक्त प्रान्त की ओर आने लगे।

चमड़े का काम मुख्यतः चर्मकार या जाटव जाति के लोग करते थे। 1911 ई0 में आगरा व अवध के संयुक्त प्रान्त की कुल जनसंख्या का प्रत्येक आठवाँ व्यक्ति चर्मकार जाति का था और उनकी कुल जनसंख्या 60,83,283 थी अतः आगरा व अवध के संयुक्त प्रांत में जूता उद्योग तरक्की करता रहा। प्रथम विश्व युद्ध (1914–18) ने गिरते हुए उद्योगों को उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सन् 1923 में आगरा में 1,90,000 रू0 से अधिक के चमड़े के जूतों का उत्पादन किया गया 60,000 रू0 से अधिक के चमड़े के सोल और 75,000 जोड़ी जूतों का उत्पादन किया गया। तीस के दशक की आर्थिक मन्दी ने उद्योगों को बुरी तरह प्रभावित किया। बिक्री कम हो गयी, कारीगरों को काम से निकाल दिया गया। जब द्वितीय विश्व युद्ध (1939–45) के दौरान चीजों का अभाव उत्पन्न होने लगा तब मूल्य वृद्धि हुई तब जिले में नये उद्योगों का विस्तार हुआ और पुनः औद्योगिक विकास शुरू हुआ।

ब्रिटिश सेनाओं के लिए अंग्रेजी स्टाइल के जूतों की माँग होने लगी। स्थानीय कारीगरों को ब्रिटिश कारीगरों से सीखने का मौका मिला और उनकी कुशलता का विकास हुआ।

1902 में दास भाइयों प्यारे कृष्णा और मोहन कृष्णा ने ''स्टुअर्ट बूट एण्ड इक्युपमेंट्स फैक्ट्री ताजगंज के पास ताज टैनरी से जुड़ी हुई लगाई। इसका प्रबन्धन यूरोपियनों के हाथ में ही था।

लाहौर से आये श्री धनीराम भल्ला ने कानपुर की कूपर ऐलन्स एण्ड कम्पनी का ले लिया और इसकी उपशाखाएँ विभिन्न क्षेत्रों में खोली। कुटीर स्तर के जूता उत्पादकों से उत्पाद खरीद कर खरीद केन्द्र (Purchasing Centre) खोले।

इस प्रकार ब्रिटिश काल में आगरा के जूता उद्योग ने बहुमुखी उन्नति की और यह उद्योग भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में अपना स्थान बनाने में सक्षम हुआ।

मुख्य शब्द : Add some keywords and Aim of the Study here.

प्रस्तावना

आगरा मुगल साम्राज्य की राजधानी रहा और मुगलों ने चमड़े के जूते बनाने के कार्य को खूब प्रोत्साहन दिया। हुमाँयू और अकबर ने आगरा में चमड़ा उद्योग को स्थापित किया। ब्रिटिश काल में भी आगरा और कानपुर ही ब्रिटिश आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। अतः आगरा घरेलू बाजार के लिए जूते–चप्पल उत्पादन का केन्द्र बन गया। चूँकि वर्ण या जाति व्यवस्था में चमड़े के काम को चर्मकार जाति से जोड़ा गया था और वंशानुगत रूप से वे इस काम में लगे थे अतः चर्मकार या जाटव जातियाँ ही मुख्य जूता कारीगर जातियाँ बनी रहीं।

मुगलकाल के पश्चात जब भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना हुई तब वर्तमान उत्तर प्रदेश को "United Provinces of Agra and Awad" के नाम से जाना गया। ब्रिटिश काल में जानवरों की खाल तथा खिंचे हुए चमड़े के निर्यात

के इस कार्य को ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों में फैलाया गया। कानपुर और आगरा उत्तर भारत में चर्म और खाल उद्योग के मुख्य केन्द्रों के रूप में उभरे। यहाँ से जानवरों की खाल को चेन्नई तथा मुम्बई के बन्दरगाहों पर ले जाया जाता था। ब्रिटिश छावनियाँ जो आगरा और कानपुर में 1805 ई0 में स्थापित हुई को जूतों, घोड़ों की जीन और घोड़ों की साजसज्जा के लिय चमड़े की आवश्यकता होती थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी इसके लिए क्षेत्रीय चर्मकारों पर ही निर्भर थी। 1857 ई0 के विद्रोह से पहले ईस्ट इण्डिया कम्पनी की नेटिव आर्मी तथा बंगाल के तोपखाने के लिए भी घोड़ों की जीन, साज व अन्य सामान कानपुर के ठेकेदार इस क्षेत्र के ही चमड़े से बनवाकर आपूर्ति करते थे। 1857–59 के विद्रोह से उत्पन्न गतिरोध और औद्योगिक उत्पादन में आई गिरावट के कारण कम्पनी चमड़े का सामान इंग्लैण्ड से मँगाने लगी। परंतु अनियमित आपूर्ति और ब्रिटिश काल की गुणवत्ता में कमी के कारण कम्पनी पुनः स्थानीय पूर्ति की ओर आकर्षित हुई। अंग्रेजों ने चमड़ा उद्योग में आधुनिक तकनीकी को अपनाया। जे0 स्टीवार्ट ने 1869 में कानपुर में पहली फैक्ट्री खोली। जानवरों की खाल खींचने में नवीन तकनीकी का प्रयोग भी जे0 स्टीवार्ट ने शुरू कराया। इस क्षेत्र में टैनरीज (चर्म कारखानों) के उदय ने अन्य क्षेत्रों के पारिवारिक चमड़ा कारीगरों को आगरा और संयुक्त प्रांत की ओर आकर्षित किया। इस प्रकार ब्रिटिश काल में आगरा चमड़ा उत्पादों मुख्यतः जूता व अन्य फुटवियर उत्पादों की कारीगरी का केन्द्र बनकर उभरे घरेलू बाजार के लिए जूते चप्पल उत्पादन के अलावा निर्यात भी होता था।

ब्रिटिश काल में चर्मकार समुदाय का एक वर्ग जो 'रंगिया' (Dyer) कहलाता था, जूता बनाने का चमड़ा बनाती थी। उनका कार्य अत्यंत परिश्रम का था और उनकी जनसंख्या भी अच्छी खासी थी। 1911 ई0 में आगरा व अवध के संयुक्त प्रान्त की कुल जनसंख्या का प्रत्येक आठवाँ व्यक्ति चर्मकार जाति का था और उनकी कुल जनसंख्या 60,83,283 थी। अतः आगरा व अवध के संयुक्त प्रांत में जूता उद्योग तरक्की करता रहा।

जूता उद्योग में स्थानीय कारीगरों का विशेष महत्व था। प्रत्येग गाँव और कस्बे में अनेक स्थानीय जूता निर्माता होते थे। विशेष बात यह है कि इस व्यवसाय में मुख्यतः उपेक्षित वर्ग के लोग ही संलग्न थे जो एक विशेष क्षेत्र में रहकर अपना कार्य करते थे। जूतों पर कढ़ाई भी की जाती थी और उन पर रत्न भी लगाए जाते थे। संयुक्त प्रान्त में कलात्मक जूतों के निर्माण और चमड़े के काम के लिए आगरा के अलावा लखनऊ, झांसी और सहारनपुर भी महत्वपूर्ण केन्द्र थे।

1884 में आगरा में 65566[1] कारीगर विभिन्न कार्यों में लगे हुये थे जैसे कि दरी व गलीचा बनाने का उद्योग, चीनी उद्योग, पत्थर पर पच्चीकारी का काम, तलवारें, ढाल आदि का उत्पादन, सिल्क के कपड़े पर चाँदी के धागे से कड़ाई इत्यादि आगरा में मुगलकाल से ही स्थापित उद्योग थे। विशेषकर जूते बनाने का कार्य मुगल काल से चला आ रहा था और 1884 में भी उन्नत था। ब्रिटिश काल में रेलवे और सड़कों का विकास हुआ और अन्य क्षेत्रों से भी सामान आगरा आने लगा। जिससे स्थानीय उत्पादकों को कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा। प्रथम विश्व युद्ध (1914–18) ने गिरते हुए उद्योगों को ऊपर उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई विशेषकर चमड़ा उद्योग में जूते बनाने का कार्य और पच्चीकारी (Stone Carving)

सन् 1923 में आगरा में 1,90,000 रू0 से अधिक के चमड़े के Chrome Uppers जूतों के उत्पादन के लिए बनाए गए। 60,000 रू0 से अधिक के चमड़े के सोल (Leather Sole) और 75,000 जोड़ी जूतों का उत्पादन किया गया। तीस के दशक की आर्थिक मन्दी ने उद्योगों को बुरी तरह प्रभावित किया। बिक्री कम हो गयी। कारीगरों को रोजगार से निकाल दिया गया। अनेक छोटी–छोटी इकाइयाँ बन्द हो गयी। जब द्वितीय विश्व युद्ध (1939–45) के दौरान चीजों का अभाव उत्पन्न होने लगा मूल्य वृद्धि हुई तब जिलें में नए उद्योगों का विस्तार हुआ और औद्योगिक विकास पुनः शुरू हुआ।[2]

आगरा जिले का प्रदेश के कुटीर उद्योगों के संचालन में दूसरा स्थान था। बडे व छोटे उद्योगों में रोजगार प्राप्त मजदूरों/कारीगरों की संख्या में तीसरा स्थान था। 1860 ई0 में आगरा में 329 पंजीकृत फैक्ट्रिया थीं जिनमें 21,131 लोग कार्यरत थे और रू0 6,85,92,000 से अधिक की वस्तुओं का प्रतिवर्ष उत्पादन करते थे। ये सभी उद्योग "Agra Municipal Corporation" (आगरा नगर महापालिका) की सीमाओं के भीतर ही स्थित थे। (काँच के चूड़ी उद्योग फिरोजाबाद को छोड़कर) जूता उद्योग के साथ–साथ दरी, कारपेट, सिल्क का कपड़ा, पेठा, दालमोठ बनाने के उद्योग भी आगरा में मुगल काल से ही स्थापित और विकसित अवस्था में थे।[3]

1819 ई0 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार चमार और उनकी उपजातियों (Sub-caste) की जनसंख्या North-West Provinces of Agra and Oudh (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में 58,16,063 (अट्ठावन लाख सोलह हजार तिरेसठ) थी। जिसमें चमार जाति 4,03,599 और जाटव 12,64,878 थी। इनमें आगरा जिले में जाटव 1,59,093 थे जबकि मेरठ जिले में जाटव जाति की जनसंख्या 175159 थी। कानपुर में जाटव जनसंख्या 1953 थी। 1891 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार आगरा जिले में कुल जाटव व चमार जाति की जनसंख्या 164585 थी। जबकि मेरठ में 2,17,038 थी।[4] कारीगर अपने पूरे परिवार के साथ जूते बनाने के कार्य में लगे थे।[5]

जूतों के अलावा आगरा चमड़े की बनी अन्य अनेक चीजों के लिए भी जाना जाता था।[6] जानवरों की खाल उतारने और उसके शोधन का कार्य मेरठ में ज्यादा होता था और वहाँ का चर्मकार वर्ग इससे अपनी आजीविका चलाता था।[7]

जूता उद्योग में, विशेषकर आगरा के जूता उद्योग में जो कि मुगलकाल से परम्परागत रूप से चला आ रहा था, में भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन की शुरूआत से क्रान्तिकारी परिवर्तन आए। अन्य उद्योगों की तरह जूता उद्योग भी बैलगाड़ी पर ही चल रहा था और इसका व्यापार भी बहुत सीमित था। परन्तु जैसे–जैसे ब्रिटिश सेनाओं ने आगरा व दिल्ली के किलों पर कब्जा किया वे स्थायी रूप से यहाँ रहने लगे। इससे अंग्रेजी

स्टाइल के जूतों की माँग होने लगी। इसके अतिरिक्त अंग्रेजों को अपने जूतों की मरम्मत के लिए अच्छे कारीगर चाहिए होते थे। शुरूआत में ब्रिटिश अधिकारी और फौजें अपने साथ कुछ अंग्रेज जूता–निर्माता रखते थे। किन्तु जैसे–जैसे माँग में वृद्धि हुई कुछ अत्यंत कुशल स्थानीय कारीगरों को अंग्रेज जूता कारीगरों के साथ लगाया जाने लगा। इस तरह से इन स्थानीय कारीगरों को एक विकसित देश के कारीगरों के साथ सीखने का मौका मिला और फिर उन्होंने अपने घरों में भी अंग्रेजों के पहनने योग्य उनकी आवश्यकतानुसार जूते बनाना शुरू कर दिया।[8] इन भारतीय कारीगरों द्वारा तैयार किये गये जूतों की लागत भी कम थी इसलिए उनके बनाए जूतों ने बाजार में अपना जगह बना ली साथ ही थोक बाजार में भी वे अपने द्वारा निर्मित जूतों को बेचने लगे। बिना किसी बहुत उच्च श्रेणी के औजारो और बिना बहुत ही उच्च श्रेणी की सामग्री के थे स्थानीय कारीगर अंग्रेजी स्टाइल के जूते बना रहे थे। अतः वे सादे और बहुत ज्यादा गुणवत्ता रहित ही होते थे। सभी तरह के जूतों के सोल तो चमड़े के होते थे परंतु अपर के डिजायन और उसमें प्रयुक्त सामग्री में विविधता होती थी। अपर्स के निर्माण में Ordinary Chrome Leather, Patent Leather or कपड़ा सभी का प्रयोग किया जाता था।

19वीं शताब्दी के अंतिम चरण (1890) आगरा के जूता उद्योग को विकसित और आधुनिक रूप देने का श्रेय दास भाइयों को जाता है। दास भाइयों (प्यारे कृष्णा और मोहन कृष्णा ने) ने 1902 में ''स्टुअर्ट बूट एण्ड इक्युपमेंट्स फैक्ट्री'' (Stuart Boot and Equipment Factory) की स्थापना की। उन्होंने पहले जूता निर्माण के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया फिर ताजगंज के पास ताज टैनरी से जुड़ी अपनी फैक्ट्री की शुरूआत की। इसका प्रबन्धन यूरोपियनों के हाथों में ही था।

श्री धनीराम भल्ला का नाम भी आगरा के जूता उद्योग के लिए उल्लेखनीय है। उन्होंने कानपुर की कूपर ऐलन्स एण्ड कम्पनी को लिया और इसकी उपशाखाऐं विभिन्न शहरों में खोलीं। उन्होंने आगरा के कुटीर स्तर के जूता निर्माताओं के उत्पादों की खरीद के लिये यहाँ खरीद केन्द्र (Purchasing Centre) खोले। आगरा कुटीर उद्योग के जूता उत्पादकों के विकास में श्री धनीराम भल्ला का अतुलनीय योगदान है।

खदान अली खान और फैयान अली खान नामक दो ऊर्जावान भाइयों ने आगरा के जूता उद्योग को नयी ऊँचाइयाँ दीं। उन्होंने के0वी0 एण्ड कम्पनी के नाम से अपनी एजेन्सी स्थापित उन्होंने दिल्ली व बम्बई से जूते लाकर आगरा में बेचना शुरू किया। उन्होंने ब्रिटेन से जूता निर्माण तकनीकें सीखीं। अपनी फैक्ट्री में मशीनों को लगवाया। उन्होंने ब्रिटिश आफीसरों की पसन्द के जूते बनाए। प्रथम विश्व युद्ध के समय (1914–18) उनकी फैक्ट्री ने अच्छा मुनाफा कमाया और नाम भी कमाया।

मिस्त्री हरदेव और सिराजुद्दीन ने साझेदारी में ''गुडलक्स एण्ड कम्पनी'' स्थापित की ये दोनों व्यक्ति उच्च कोटि की योग्यता रखते थे। उन्होंने फुटवियर निर्माण में मशीनरी के बजाय कारीगरों द्वारा हाथों से निर्माण को प्रमुखता दी। मैसर्स खदाम अली खान की के0वी0 फैक्ट्री तथा हरदेव सिंह की गुडलक्स एण्ड कम्पनी ने आगरा के जूता उद्योग की प्रतिष्ठा को बढ़ाया और उनसे प्रेरणा लेकर आगरा में अनेकों फैक्ट्रियाँ अस्तित्व में आ गयीं।

खदाम अली खान की के0वी0 फैक्ट्री ने न केवल आगरा में जूता उद्योग को नई ऊँचाइयाँ दीं साथ ही उन्होंने जूता निर्माताओं का एक संगठन बनाया और स्वयं उसके अध्यक्ष और संरक्षक बने। उन्होंने सभी फैक्ट्री मालिकों को एक केन्द्रीय बाजार बनाने पर जोर दिया जहाँ पर सभी जूता निर्माताओं की अपनी–अपनी दुकाने हों और वे कुटीर उद्योग के घरेलू निर्माताओं से संपर्क भी स्थापित करें। उनके निर्देशन और संरक्षण में हींग की मण्डी आगरा में एक जूता बाजार स्थापित किया गया जो आज उनकी दूर दृष्टि और दृढ़ निश्चय का एक स्मारक बन कर खड़ा है। श्री धनीराम भल्ला, लाहौर के निवासी थे और आगरा के जूता उद्योग के लिये एक जानीमानी हस्ती बन कर उभरे। उन्होंने मैसर्स कूपर ऐलेन्स कानपुर की मुख्य शाखा को अधीग्रहीत किया और आगरा के कुटीर उद्योग में काम करने वाले कारीगरों के सस्ते उत्पादों को खरीदने के लिये खरीद केन्द्र स्थापित किये जहाँ से उत्तर भारत में फैले अपने अन्य एजेन्ट्स तक माल पहुँचाने का कार्य उन्होंने किया।

आगरा के फुटवियर उद्योग के विकास में दयालबाग का भी अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। दयालबाग ने जूता उद्योग को उस समय संभाला जब यह उद्योग मन्दी के दौर में कठिनाई के दौर से गुज़र रहा था। साथ ही चमड़ा उद्योग के Waste या व्यार्थ उत्पाद को पुनः प्रयोग करने की दयालबाग ने शुरूआत की। व्यर्थ की चमड़ा कतरनों से चमड़े के बटन बनाना शुरू किया। दयालबाग में उच्च गुणवत्ता वाले फुटवियर बनाने की ओर ध्यान दिया जो कि मजबूती, आराम और डिज़ायन में भी अच्छे हो साथ ही देश के आम आदमी की पहुँच में भी हों। दयालबाग ने अपने कार्य को इतने अच्छे से अंजाम दिया कि सन् 1930 में उ0प्र0 के उद्योग विभाग के निदेशक ने दयालबाग के अधिकारियों से सम्पर्क किया और Government Leather Working School को अपने संरक्षण में लेने को कहा।

दयालबाग लैदर वर्किंग स्कूल के प्राचार्य रहे स्वर्गीय श्री चन्दालाल जी ने फुटवियर उद्योग पर पहली किताब लिखी जो ऊर्दू और हिन्दी में प्रकाशित हुई थी –

''मॉडल शू मेकर (Model Shoe Maker) एक प्रसिद्ध अंग्रेज पत्रकार मि0 पॉल बर्नटन (Paul Brunton) दयालबाग लैदर गुड्स फैक्ट्री को देखने 1934 में आए थे और उन्होंने लिखा, ''एक गुप्त भारत की खोज में (A search into Secret India)

इसके पश्चात 1936 में तत्कालीन वायसराय लार्ड विलिंगटन ने इस फैक्ट्री का निरीक्षण किया। यह निरीक्षण ''पाल बर्नटन की टिप्पणी की सत्यता को परखने के लिए किया था। यहाँ केवल 15 मिनट में उनके लिए जूतों की जोड़ी तैयार कर दी गयी (शुरूआत से फिनिशिंग तक)। उन्होंने अपने अंग्रेजी जूतों को उतारकर इस जोड़ी को पहना।

निष्कर्ष

इस प्रकार ब्रिटिशकाल में आगरा के जूता उद्योग ने बहुमुखी उन्नति की और यह उद्योग भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में अपना स्थान बना पाने में सक्षम हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *The Emperial Gazetteer of India, Page – 188, The Indian Empire vol. III, Economic, Published Under the Authority of His Majesty, Secretary of State for India in Council, Oxford, 1907, Archelogical Survey of India*
2. *Uttar Pradesh District Gazetteers, Agra by Esha Basanti Joshi, Published by Govt. of U.P. Department of District Gazetteers U.P. Lucknow and Printed at the New Govt. Press, Lucknow Uttar Pradesh 1965 Page 143-144 Archeological Survey of India, Agra U.P.*
3. *Uttar Pradesh District Gazetteers, Agra by Esha Basanti Joshi, Published by Govt. of U.P. Department of District Gazetteers U.P. Lucknow and Printed at the New Govt. Press, Lucknow Uttar Pradesh 1965 Page 143-144 Archeological Survey of India, Agra U.P., Page 144*
4. *W. Crooke B.A., Bengal Civil Service, The Tribes and Castes of the North Western India Pg. 192-194.*
5. *Atkinson – North-Western Provinces Gazetteer Vol. – III P. 553-554.*
6. *Atkinson – North-Western Provinces Gazetteer Vol. – III, Pg. 553-554*
7. *Atkinson-North-Western Provinces Gazetter Vol. – III P. 308.*
8. *Govt of India, Agra Gazetteer 1921, P. 55-56*